IJCRT.ORG ISSN : 2320-2882
INTERNATIONAL JOURNAL OF CREATIVE RESEARCH THOUGHTS (IJCRT)
An International Open Access, Peer-reviewed, Refereed Journal

उत्तराखण्ड में ग्रामीण क्षेत्रों से शहरों की ओर जनसंख्या प्रवास : एक भौगोलिक अध्ययन

1.सतीश चन्द्र जोशी (शोध छात्र), भूगोल विभाग
2.डॉ० पी० के० भट्ट, (एसोसिएट प्रोफेसर), भूगोल विभाग
लक्ष्मण सिंह महर परिसर, सोबन सिंह जीना विश्वविद्याालय अल्मोड़ा।

शोध सारांश :

जनसंख्या स्थानान्तरण एक सामाजिक प्रक्रिया है, मनुष्य जीवन के प्रारम्भ काल से ही प्रव्रजन करता आ रहा है, परन्तु वर्तमान समय में उत्तराखण्ड के मैदानी जनपदों की ओर हो रहे अत्यधिक जनसंख्या प्रवास के कारण मैदानी जनपदों में अप्रत्याशित रूप से हो रही जनसंख्या वृद्धि चिन्ता का विषय है। जनपद हरिद्वार, देहरादून, उधमसिंह नगर एवं नैनीताल में तीव्र जनसंख्या वृद्धि के कारणों एवं प्रभावों को जानने के उद्देश्य से शोध किया गया है। किसी निश्चित क्षेत्र में निवास करने वाली जनसंख्या की वृद्धि उस स्थान की आर्थिक, सामाजिक एवं भौगोलिक कारकों पर निर्भर करती है। जिन क्षेत्रों में मानव के विकास हेतु अनुकूल दशाएं, रोजगार के अवसर, अधिक आय के अवसर एवं शिक्षा व स्वास्थ्य सुविधाएं विद्यामान होती हैं उन स्थानों की ओर पर जनसंख्या तीव्र गति से प्रवास करती है। उत्तराखण्ड में ग्रामीण क्षेत्रों में आजीविका के साधन सिमित होने के कारण वर्तमान में ग्रामीण जनसंख्या तीव्र गति से मैदानी व शहरी क्षेत्रों की ओर रोजगार की तलाश में प्रवास कर रही है।

शब्द : प्रव्रजन, जलवायु, मैदानी, सामाजिक, भौगोलिक, रोजगार, आजीविका।

प्रस्तावना :

जनसंख्या अध्ययन एक रूचि का विषय है। भूगोल विषय के अन्तर्गत एक स्वतन्त्र विषय के रूप में जनसंख्या भूगोल का अध्ययन को मान्यता देने वाले प्रथम विद्वान ट्रिवार्था थे। पृथ्वी पर मानव का उद्भव आज से लगभग 10 लाख वर्ष पूर्व हुआ माना गया है। जीवन के प्रारम्भ काल में मनुष्य विकसित व सभ्य नहीं था। धीरे–धीरे मनुष्य सभ्यता की ओर अग्रसर होता गया और स्थाई जीवन व्यतीत करने लगा। प्रारम्भ में आखेट एवं कन्दमूल आदि द्वारा अपनी उदरपूर्ति करता, व घुमन्तु जीवन व्यतीत करता था। जैसे जैसे जनसंख्या का विस्तार होता गया, मनुष्य आदर्श जलवायु वाले क्षेत्रों की ओर प्रव्रजन करता है, यही कारण है कि सर्वप्रथम जनसंख्या का विकास नदीघाटी क्षेत्रों में हुआ। कालान्तर में जैसे–जैसे मनुष्य विकसित होता गया वैसे–वैसे जिज्ञासा वस आवश्यकताओं की पूर्ति हेतु वह विश्व के विभिन्न क्षेत्रों में भ्रमण करता रहा और निवास करने लगा।

किसी प्रदेश एवं देश में निवास करने वाली कार्यशील जनसंख्या के आधार पर उस क्षेत्र का विकास निर्भर करता है। किसी स्थान विशेष की भौगोलिक, सामाजिक, आर्थिक, एवं राजनितिक कारकों का प्रभाव वहां के मानव समूह पर प्रत्यक्ष एवं अप्रत्यक्ष रूप से पड़ता है। उत्तराखण्ड के पर्वतीय एवं मैदानी जनपदों में जनसंख्या वितरण पर भौगोलिक, सामाजिक, आर्थिक, एवं राजनितिक कारकों का प्रभाव स्पष्ट रूप से देखने को मिलता है। विगत कुछ वर्षों से राज्य के मैदानी व शहरी क्षेत्र में आकर द्वारा यहां पर बसने वाली जनसंख्या में तेजी देखी गयी है। पर्वतीय व ग्रामीण क्षेत्र से लोगों के आकर यहां बसने की तीव्र गति के कारण मैदानी जनपदों में उच्च जनसंख्या वृद्विदर दर्ज की गयी है। जनसंख्या वृद्धि एक सामान्य प्रक्रिया है, परन्तु जब जनसंख्या की बृद्विदर उच्च हो तो क्षेत्र विशेष पर उपलब्ध संसाधनों पर इसका प्रतिकूल प्रभाव भी दिखाई पड़ता है। उच्च बृद्विदर से क्षेत्र पर जनसंख्या का दबाव बढ़ने लगता है।

शोध क्षेत्र का परिचय :

उत्तराखण्ड विषम भौगोलिक परिस्थिति वाला पर्वतीय राज्य है। उत्तर प्रदेश से अलग कर 9 नवम्बर 2000 को उत्तरांचल नाम से एक अलग राज्य का गठन किया गया। जनवरी 2007 में राज्य का नाम परिवर्तित कर इसे उत्तराखण्ड नाम दिया गया है। उत्तराखण्ड का विस्तार $28^{0}7'$ उत्तरी अक्षांश से $31^{0}4'$ उत्तरी अक्षांश तक तथा $77^{0}7'$ पूर्वी देशान्तर से $81^{0}1'$ पूर्वी देशान्तर तक है, जो 53483 वर्ग किलोमीटर में फैला है। राज्य के उत्तर में तिब्बत (चीन), पूर्व में नेपाल के साथ अन्तर्राष्ट्रीय सीमा साझा करता है, जबकि पश्चिम में हिमाचल प्रदेश तथा दक्षिण में उत्तर प्रदेश के साथ सीमा साझा करता है।

भौगोलिक मानचित्र उत्तराखण्ड

स्त्रोत : आर्क जी०आई०एस० एप्लीकेशन

देश के हिमालयी राज्यों की श्रेणी के अन्तर्गत सम्मिलित उत्तराखण्ड 11वॉ राज्य है। राज्य के दो मण्डलों कुमायूं एवं गढ़वाल के अन्तर्गत 13 जनपद सम्मिलित है। क्षेत्रफल की दृष्टि से चमोली राज्य का सबसे बड़ा एवं चम्पावत सबसे छोटा जनपद है। राज्य में हरिद्वार एवं उधमसिंह नगर दो मैदानी जनपदों को छोड़कर शेष 11 जनपद पर्वतीय जनपदों की श्रेणी में आते हैं।

आंकडे संग्रहण एवं विधितन्त्र :

प्रस्तुत शोध पत्र में शोधार्थी द्वारा प्राथमिक आंकड़ों का संकलन राज्य के जनपद हरिद्वार, देहरादून, उधमसिंह नगर एवं नैनीताल के चार शहरों हरिद्वार, नगर देहरादून, नगर रूद्रपुर एवं नगर हल्द्वानी में निवास कर रहे प्रवासी समुदाय के लोगों से साक्षात्कार के माध्यम से किये गये हैं, साथ ही द्वितियक समंकों का संकलन विभिन्न पुस्तकों, शोध ग्रन्थों, उत्तराखण्ड पलायन निवारण आयोग द्वारा जारी आंकड़ों, भारत सरकार द्वारा जारी जनगणना 2011, पत्र–पत्रिकाओं एवं समाचार पत्रों के माध्यम से एकत्रित किये गये है। मानचित्रण के लिये आर्क०जी0आई०एस० एप्लीकेशन एवं चार्ट के लिये एम०एस० एक्सल का उपयोग किया गया है।

निदर्शन :

राज्य के ग्रामीण क्षेत्रों से शहरों को लोगों द्वारा किये जा रहे प्रव्रजन के कारण और प्रभावों को जानने के उद्देश्य से हरिद्वार, देहरादून, रूद्रपुर एवं हल्द्वानी शहर क्षेत्र में निवास कर रहे प्रवासी परिवार के कुल 800 लोगों (प्रत्येक शहर से 200 लोग) को स्नोवॉल सैमलिंग के आधार पर चयन कर उत्तरदाता के रूप में सम्मिलित किया गया है।

उद्देश्य :

1. मैदानी जनपदों में प्रवास के के लिये उत्तरदायी आकर्षक तत्वों का अध्ययन करना।
2. मैदानी जनपदों में उच्च जनसंख्या वृद्धिदर के कारणों का अध्ययन करना।
3. मैदानी जनपदों में जनसंख्या अतिभार के कारण हो रही समस्याओं का अध्ययन करना।

शोध सीमाएं :

चूंकि शोध एक निश्चित क्षेत्रान्तर्गत किया जा रहा है, जिसकी अपनी भौतिक, सामाजिक, आर्थिक एवं धार्मिक विशेषताएं है। अतः शोध क्षेत्र के परिणाम अन्य क्षेत्र में लागू नहीं किये जा सकते। साथ ही प्रवासी लोगों की निश्चित आंकडे उपलब्ध नहीं हैं, अतः प्रवासी लोगों के सम्बन्ध में शोध किये जाने की अनेक संभावना हैं।

उत्तराखण्ड में जनसंख्या वृद्धि :

जनसंख्या वृद्धि का तात्पर्य किसी स्थान विशेष में एक निश्चित समय के अन्तर्गत जनसंख्या में होने वाली वृद्धि या परिवर्तन से होता है। जनसंख्या में होने वाला यह परिवर्तन धनात्मक एवं ऋणात्मक भी हो सकता है। किसी भी प्रदेश अथवा देश की जनसंख्या में होने वाला परिवर्तन प्रजननता (जन्मदर), मर्त्यता (मृत्युदर) एवं प्रव्रजन का परिणाम होता है। तालिका संख्या 01 से स्पष्ट होता है कि, उत्तराखण्ड राज्य गठन के उपरान्त वर्ष 2001 एवं 2011 में करायी गयी जनगणनानुसार जहां राज्य के पर्वतीय जनपदों में दशकीय जनसंख्या वृद्धिदर राष्ट्रीय औसत

से कम दर्ज की गयी वहीं मैदानी जनपद हरिद्वार, उधमसिंह नगर, नैनीताल एवं देहरादून में इसी समयावधि में उच्च वृद्धिदर देखी गयी है।

उत्तराखण्ड में दशकीय जनसंख्या वितरण एवं जनसंख्या वृद्धिदर (तालिका संख्या– 01)

क्र०सं०	जनपद का नाम	जनसंख्या		वृद्धिदर
		2001	2011	
01	देहरादून	1282143	1698560	32.48
02	टिहरी गढ़वाल	604747	616409	1.93
03	पौड़ी गढ़वाल	697078	686527	(-) 1.51
04	चमोली	370359	391114	5.60
05	उत्तरकासी	295013	329686	11.75
06	रूद्रप्रयाग	227439	236857	4.14
07	हरिद्वार	1447187	1927029	33.16
08	नैनीताल	762909	955128	25.20
09	उधमसिंह नगर	1235614	1648367	33.40
10	अल्मोड़ा	632866	621927	(-) 1.73
11	पिथौरागढ़	462289	485993	5.13
12	चम्पावत	224542	259315	15.49
13	बागेश्वर	247163	259840	5.13

उत्तराखण्ड के सभी जनपदों में जनसंख्या की वृद्धिदर में काफी भिन्नता देखी गयी है। वर्ष 2011 के जनगणना आंकड़ों में राज्य की औसत दशकीय जनसंख्या वृद्धिदर 19.17% आंकी गयी जो इसी अवधि के राष्ट्रीय औसत जनसंख्या वृद्धि (17.64) से अधिक है। राज्य के पर्वतीय जनपदों में जनसंख्या वृद्धिदर 10% से कम रही, वहीं मैदानी जनपदों में जनसंख्या की वृद्धि दर 25% या उससे भी अधिक देखी गयी है। जनपद हरिद्वार में जनसंख्या वृद्धिदर 30.63 रही है, अतः जनपद हरिद्वार में जनसंख्या में हो रही तीव्र वृद्धि के कारणों को जानने एवं इसके प्रभावों को समझने के उद्देश्य से शोध किया गया है।

जनसंख्या बृद्धिदर के आधार पर विभाजन

01	**उच्च जनसंख्या वृद्धिदर वाले जनपद**	हरिद्वार, उधमसिंह नगर, नैनीताल एवं देहरादून।
02	**मध्यम जनसंख्या वृद्धिदर वाले जनपद**	उत्तरकासी एवं चमपावत।
03	**निम्न जनसंख्या वृद्धिदर वाले जनपद**	टिहरी, चमोली, पिथौरागढ़, रूद्रप्रयाग एवं बागेश्वर।
04	**ऋणात्मक जनसंख्या वृद्धिदर वाले जनपद**	पौड़ी गढ़वाल एवं अल्मोड़ा।

जनसंख्या वृद्धिदर के निर्धारक तत्व

01	**प्रजननता**	प्रजननता का तात्पर्य किसी महिला द्वारा किसी निश्चित समयान्तर्गत जन्म दिये गये जीवित शिशुओं से है। प्रजननता का मापन जीवित बच्चों के आधार पर ही किया जाता है।
02	**मर्त्यता**	मर्त्यता एक जैविक घटना है। मर्त्यता का आशय निश्चित समयावधि में किसी क्षेत्र में होने वाली मृत्युओं की संख्या से है। जहां प्रजननता जनसंख्या वृद्धि को दर्शाती है, वहीं मर्त्यता जनसंख्या में ह्रास को व्यक्त करती है।
03	**प्रवास**	जव मनुष्य अपने निवास क्षेत्र को छोड़कर दूसरे क्षेत्र में निवास करने लगता है और वहीं पर बस जाता है, तो इस प्रक्रिया को प्रवास कहा जाता है। किसी स्थान विशेष में होने वाले जनसंख्या परिवर्तन के लिये प्रवास एक प्रमुख उत्तरदायी कारक है।

राज्य में प्रवास के कारण :

राज्य के ग्रामीण क्षेत्रों से लोगों द्वारा किये जा रहे पलायन के कारण जानने हेतु शोधार्थी द्वारा राज्य के चार प्रमुख शहर हरिद्वार, देहरादून, रूद्रपुर एवं हल्द्वानी में ग्रामीण क्षेत्रों से आकर निवास कर रहे प्रत्येक शहर से 200 लोग कुल 800 लोगों से प्रश्नावली के माध्यम से आंकड़ें इकट्ठा किये गये हैं।

सर्वेक्षण से प्राप्त आंकड़ों से स्पष्ट होता है कि सर्वाधिक संख्या में लोग रोजगार की तलाश में नगर क्षेत्र की ओर प्रवास कर रहे हैं। कुल प्रवासित लागों में रोजगार हेतु 50.38 प्रतिशत, शैक्षणिक उद्देश्य से 12.63 प्रतिशत, राजकीय सेवा के कारण 12.00 प्रतिशत, सामाजिक कारणों से 5.50 प्रतिशत, पारिवारिक कारणों से 4.75 प्रतिशत, विस्थापन के कारण 3.63 प्रतिशत, राज्य में बढ़ती आपदा की घटनाओं के कारण 2.50 प्रतिशत, स्वास्थ सम्बन्धी कारणें से 1.88 प्रतिशत एवं 6.75 प्रतिशत लोगों द्वारा अन्य करणों से ग्रामीण क्षेत्र से शहरी क्षेत्रों की ओर प्रवास किया गया है। प्रवास करने वाले 800 लोगों में 251 महिलाएं जबकि 549 पुरूष हैं। शैक्षिक कारणों से प्रवास करने वाले जनसमूह में महिलओं की संख्या पुरूषों से अधिक दर्ज की गयी है।

तालिका : 02 विभिन्न कारणों से प्रवास करने वाले लोगों की संख्या

प्रवास के कारण	उत्तरदाताओं संख्या							
	हरिद्वार		देहरादून		रूद्रपुर		हल्द्वानी	
	महिला	पुरूष	महिला	पुरूष	महिला	पुरूष	महिला	पुरूष
रोजगार हेतु	33	96	31	36	29	105	16	57
राजकीय सेवा	08	13	11	19	02	09	13	21
शिक्षा प्राप्त करने हेतु	06	03	14	21	06	07	25	19
स्वास्थ कारण	00	03	02	04	02	00	03	01
विस्थापित	05	11	02	11	00	00	00	00
आपदाओं के भय	00	02	03	03	00	03	00	09
पारिवारिक कारणों से	01	06	05	07	03	08	05	03
समाजिक कारण	01	04	04	11	06	11	00	07
अन्य कारण।	02	06	03	13	04	05	06	15
कुल	**56**	**144**	**75**	**125**	**52**	**148**	**68**	**132**

स्त्रोत : साक्षात्कार के माध्यम से प्राप्त प्राथमिक आंकड़े।

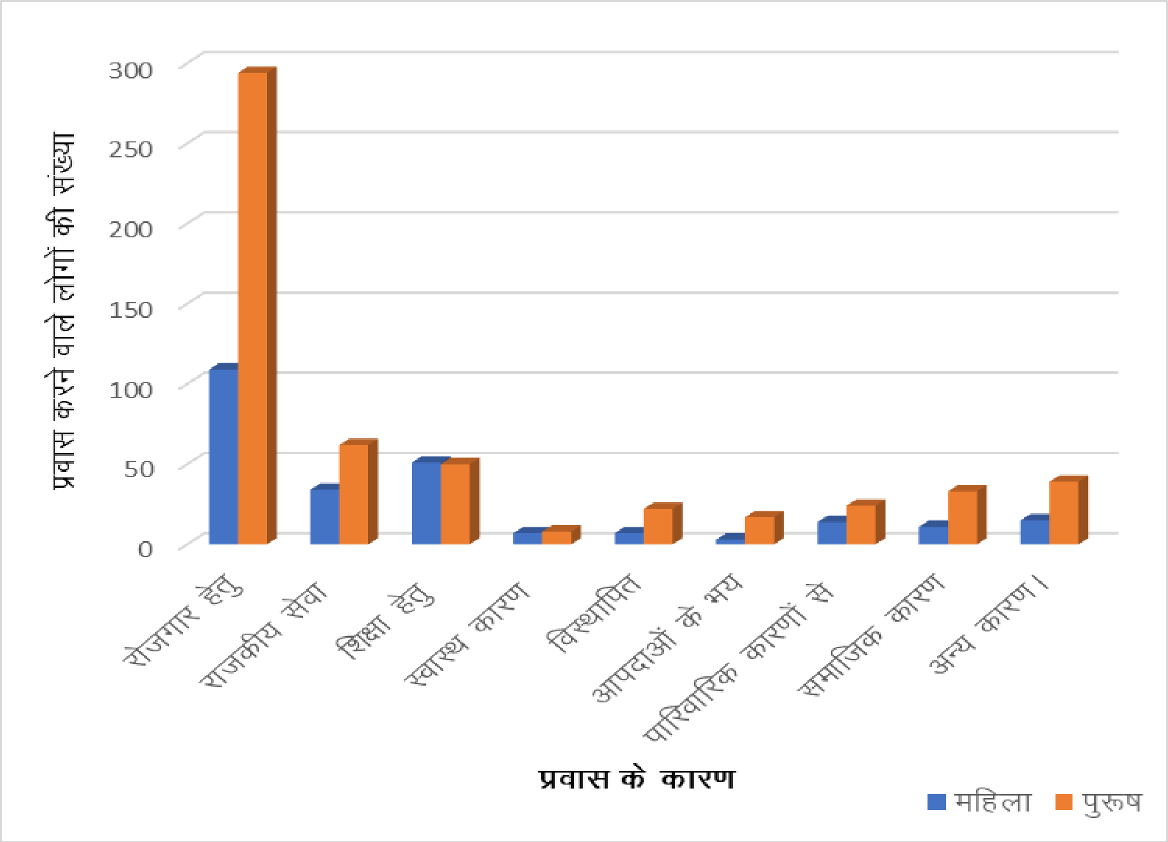

आयु संरचना के आधार पर प्रवासियों का विवरण:

प्रवास के लिये उत्तरदायी कारकों को आयु वर्ग प्रभावित करता है, अतः प्रवास के अध्ययन के लिये आयु वर्ग अपना विशेष महत्व रखता है। प्राप्त आंकड़ों से स्पष्ट होता है कि अध्ययन क्षेत्र में प्रवासियों में सर्वाधिक जनसंख्या 21 से 45 आयु वर्ग के लोगों की है। यही वह जनसंख्या समूह होता है जिस पर परिवार, समाज, प्रदेश अथवा देश के विकास पर सर्वाधिक योगदान होता है। प्रवास करने वाले आयु वर्ग में सबसे कम संख्या 60 वर्ष से अधिक आयु

के लोगों का है। पवास करने वाले लोगों में 20 वर्ष से कम आयु के 140, 21से 45 आयु वर्ग के 409, 46 से 60 आयु वर्ग के 205 एवं 60 वर्ष से अधिक आयु के 46 लोग प्रवासी के रूप में सम्मिलित हैं।

तालिका : 03 विभिन्न आयु वर्ग के प्रवासित लोगों की संख्या

आयु वर्ग	20 वर्ष से कम		21–45		46–60		60 से अधिक	
	महिला	पुरूष	महिला	पुरूष	महिला	पुरूष	महिला	पुरूष
संख्या	74	66	113	296	53	152	11	35
संख्या (%में)	9.25	8.25	14.13	37.00	6.63	19.00	1.37	4.37

स्त्रोत : साक्षात्कार के माध्यम से प्राप्त प्राथमिक आंकड़े।

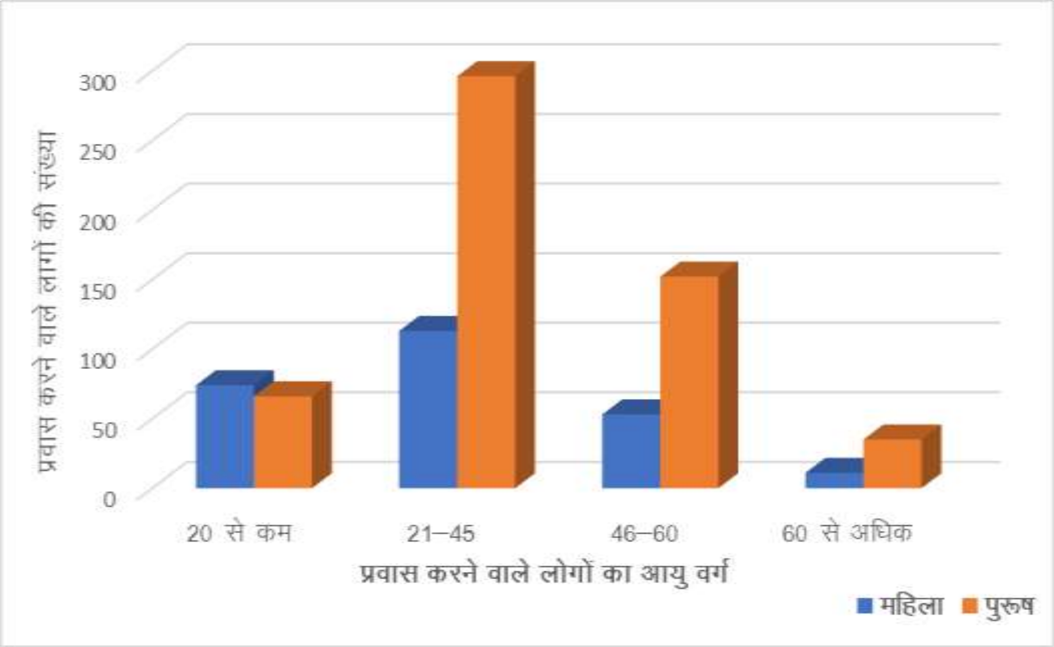

प्रवास के प्रभावः

जब किसी स्थान से जनसमूह अन्य क्षेत्रों को प्रवास करता है, तो उसके कुछ उद्देश्य होते हैं। उत्तराखण्ड के पर्वतीय क्षेत्रों से प्रवास का प्रमुख कारण रोजगार ही रहा है। अधिकांश लोग रोजगार की तलाश में ही अन्य क्षेत्रों को प्रवास कर रहे हैं। प्रवास के कारण प्रवासित एवं आप्रवासित दोनों क्षेत्रों में इसका प्रभाव पड़ता है, यह प्रभाव सामाजिक, आर्थिक, राजनैतिक एवं व्यक्तिगत हो सकता है। प्रवास के कारण पड़ने वाले प्रभाव सकारात्मक एवं नकारात्मक दोनों ही प्रकार के हो सकते हैं, जिस कारण प्रवास के होने वाले प्रभावों का अध्ययन भी महत्वपूर्ण हो जाता है।

क्र०सं०	प्रवास के प्रभाव	
	सकारात्मक प्रभाव	**नकारात्मक प्रभाव**
01	लोगों की आय में बृद्धि हुई है।	पर्वतीय जनपदों में कृषि भूमि घट रही है।
02	लोगों के जीवन स्तर ऊँचा हुआ है।	गांव जनविहीन हो रहे हैं।
03	रिति–रिवाज एवं परम्पराओं का हस्तांतरण हुआ है।	पर्वतीय क्षेत्रों में उपलब्ध संसाधनों का विदोहन नहीं हो पा रहा है।
04	सामाजिक सम्मान व प्रतिष्ठा बढ़ी है।	अप्रवासी क्षेत्र में जनसंख्या का दबाव बढ़ रहा है।
05	सामाजिक भेदभाव में कमी आयी है।	अपराधों में वृद्धि दर्ज की गयी है।
06	शिक्षा का विकास हुआ है।	स्वास्थ्य सम्बन्धी परेशानियां बढ़ी हैं।

प्रवासित लोगों के आय एवं सामाजिक प्रभावों को जानने के उदेश्य से शोधार्थी द्वारा प्रश्नावली में कुल 09 प्रश्न सम्मिलित कर साक्षात्कार किया गया। साक्षात्कार से प्राप्त आंकड़ों से स्पष्ट है कि, अधिकांश लोग आय में बढ़ोत्तरी को प्राथतिकता देते हैं, 09 प्रतिशत लोग जीवन स्तर में सुधार को प्रमुखता देते हैं। इसी प्रकार मूल परम्पराओं में ह्रास, अपराधों की बढ़ती प्रवृत्ति परिवारिक रिस्तों में कमी, सामाजिक प्रतिष्ठा एवं भेदभाव आदि में प्रमुख रूप से प्रभाव की बात को प्रवासी लोगों द्वारा स्वीकार किया गया है।

तालिका : 04

क्र०सं०	प्रवास के प्रभाव	उत्तरदाताओं की संख्या	प्रतिशत (%)
01	आय बढी है।	483	60.37
02	जीवन स्तर में सुधार हुआ है।	72	9.00
03	मूल परम्पराओं का ह्रास हुआ है ।	34	4.25
04	नये रिति–रिवाज अपनाये हैं।	58	7.25
05	बिमारियां बढ़ी हैं।	51	6.37
06	सामाजिक भेदभाव की भावना में कमी आयी है।	39	4.88
07	समाजिक प्रतिष्ठा बढ़ी है।	17	2.16
08	सामाजिक सुरक्षा में कमी व अपराध बढ़ रहे हैं।	31	3.88
09	पारिवारिक रिस्तों में कमी आयी है।	15	1.87
	कुल	**800**	**100.00**

स्त्रोत : साक्षात्कार के माध्यम से प्राप्त प्राथमिक आंकड़े।

निष्कर्ष :

उत्तराखण्ड के पर्वतीय क्षेत्रों से जनसंख्या का स्थानान्तरण तीव्र गति से मैदानी क्षेत्रों की हो रहा है। लोगों में शहरी जीवन जीने व अधिक आय प्राप्त करने की इच्छा प्रवास को और अधिक गति प्रदान कर रहा है। राज्य में पर्वतीय क्षेत्र का विस्तार अधिक है, विषम भौगोलिक क्षेत्र में उद्योग धन्धों का विकास न होने के कारण लोग रोजगार हेतु पलायन को विवश हैं। कृषि कार्य के लिये उपजाऊ भूमि का अभाव, सिंचाई के साधनों की कमी, भी प्रवास का एक कारण देखा गया है। परिवारिक उत्तरदायित्वों के निर्वहन की जिम्मेदारियों के कारण पुरूषों द्वारा आय प्राप्ति के अवसरों की तलाश में शहरों को प्रवास करने की प्रवृत्ति भी देखी गयी है। चूकि राज्य के मैदानी जनपद हरिद्वार व उधमसिंह नगर में विस्तृत औद्योगिक आस्थन होने के कारण रोजगार हेतु युवा पर्वतीय क्षेत्रों से इन क्षेत्रों की ओर पलायन कर रहे हैं। सर्वेक्षण के अन्तर्गत सामाजिक प्रतिष्ठा भी प्रवास का एक प्रमुख कारण देखा गया है, समाज में लोग द्वारा विकसित शहरी क्षेत्रों में निवास करना एक प्रतिष्ठा के रूप में देखा जाने लगा है। ग्रामीण क्षेत्रों में निवासरत व्यक्तियों की अपेक्षा शहरों में निवास कर रहे लोगों को अधिक प्रतिष्ठित व्यक्ति के रूप में देखा जा रहा है।

राज्य में ग्रामीण क्षेत्रों से हो रहे प्रवास के सकारत्मक एवं नकारत्मक दोनों ही प्रभाव देखे गये हैं। पर्वतीय क्षेत्रों में आधारभूत सुविधाओं की कमी, रोजगार के अवसर न होना, शिक्षा एवं स्वास्थ सुविधाओं का न होना प्रवास के लिये उत्तरदायी कारक माने जा सकते हैं। परन्तु इन सब के उपरान्त भी ये लोग आज भी अपने मूल क्षेत्रों से जुड़े हुये हैं और अपनी संस्कृति एवं सभ्यता को बचाये हुये है।

सन्दर्भ ग्रन्थ :

1. बलोदी, राजेन्द्र प्रसाद, 2015, ‘‘उत्तराखण्ड समग्र ज्ञानकोश’’, विनसर पब्लिशिंग कम्पनी,।
2. हुसैन, माजिद 2020, ‘‘भारत का भूगोल‘‘, McGraw Hill Education, Chennai TamilNadu, India, 600116.
3. हुसैन, माजिद 2024, ‘‘मानव भूगोल‘‘, रावत पब्लिकेशन, जवाहर नगर, जसपुर भारत।
4. मैठानी, डी०डी०, प्रसाद, गायत्री, नौटियाल, राजेश 2020, ‘‘उत्तराखण्ड का भूगोल’’, शारदा पुस्तक भवन इलाहाबाद।
5. ममोरिया, चतुर्भुज एवं गर्ग एच०एस० (2025), ‘‘जनसंख्या भूगोल‘‘, एस०बी०पी०डी० पब्लिकेशन, आगरा उत्तरप्रदेश।
6. उत्तराखण्ड आर्थिक सर्वेक्षण 2022–23 खण्ड–1
7. भारतीय जनगणना 2011।
8. उत्तराखण्ड ग्राम्य विकास एवं पलायन निवारण आयोग रिपोर्ट 2022।